Q.1

A.
उ0 => इंडियन एसोसिएशन :- यह एक क्रान्तिकारी ~~संगठन~~ संगठन था इसकी स्थापना 1876 में हुई।

B. चार्ल्स मेटकाफ :-
- यह ब्रिटिश काल में भारत के गवर्नर जनरल थे इनका कार्यकाल 1835 - 36 तक था
- इन्हे भारतीय प्रेस के मुक्ति दाता कहा जाता है।

C.

D.

E.
उ0=) एनफील्ड राइफल :- यह राइफल ही 1857 की क्रान्ति का प्रमुख तात्कालिक कारण बनकर प्रस्तुत हुई थी।
- मंगल पाण्डे ने इस राइफल में चर्बी वाले कारतूसो के प्रयोग के कारण इसके उपयोग ~~का~~ पर विरोध किया था।

F. उ0=) मलिक काफुर :-
- इन्हे हजार दीनारी भी कहा जाता है
- यह अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण विजय के प्रमुख सूत्रधार बने।
- गुजरात से हजार दीनार में खरीदा गया गो गुलाम था।

(G)
उ० => घाघरा का युद्ध :- • यह युद्ध बाबर तथा अफगानों के मध्य लडा गया था
• इसमें बाबर की विजय हुई थी
• यह लगभग 1529 ई. में हुआ था।

(I)
उ० => तालीकोटा का युद्ध :- • यह 1565 ई. में हुआ था
• इसे राक्षसी तगड़ी के युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।
• इस युद्ध से विजयनगर साम्राज्य का अंत हुआ था।

(H)
उ० => नासा पार्टी :- यह नेपोलियन की पार्टी थी
- ~~यह~~ नेपोलियन फ्रांस की क्रांति का प्रमुख व्यक्तित्व बना

(J)

(K)
उ० => आल्हा -ऊदल :- चंदेल शासकों की सेवा में यह वीर भाई थे।
- पृथ्वीराज चौहान से ~~न~~ इनका युद्ध हुआ था।
- प्राचीन मान्यताओं के अनुसार दोनों भाई माता शारदा के बड़े भक्त थे तथा आज भी मैहर में माता शारदा के दर्शन के लिए आते है

(L)
उ० =)

(M)
उ० =)

उ० (N) (बिल ऑफ राइट्स 1689) :— यह इंग्लैंड की गौरवपूर्ण, रक्तहीन क्रान्ति में प्रस्तुत प्रमुख दस्तावेज थे।
- इनमें मूल अधिकारों का वर्णन मिलता है।

(O)
उ० =) जार निकोलस द्वितीय :— रूस (सोवियत संघ) में जारशाही विद्यमान थी
- जार अर्थात शासक

प्र० 2
A. उ० =) स्वतंत्रता आंदोलन (1857) में क्रान्तिकारियों ने अत्यंत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- रोटी तथा कमल का फूल इनका प्रतीक चिह्न बना
- मंगल पाण्डे, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई आदि प्रमुख क्रान्तिकारी थे।
- क्रान्तिकारियों ने जनजागरूकता फैलाई तथा कई अखबारों का भी प्रकाशन प्रारंभ किया।
- ब्रिटिश शासन की क्रूरता तथा अत्याचार का मुखर विरोध क्रान्तिकारीयों के द्वारा ही किया गया
- तथा इन्हीं के बलिदान से आज हम आजाद भारत में निवास कर रहे हैं।

(13)

उ० =) • भारत छोड़ो आन्दोलन वर्ष 1942 में प्रारम्भ हुआ जिसका नेतृत्व महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया था।

• जब भारतीय अंग्रेजों की घृणित नीति तथा लुटेरे व्यवहार से आहत होकर, द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के पश्चात अंग्रेजों के द्वारा किए गए स्वायत्त राज्य के प्रस्ताव को भी अस्वीकार कर के स्वतंत्र देश की कामना करने लगे तब यह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ।

• क्रिप्स मिशन का आगमन भी भारत में इसी दौरान हुआ थे।

•

(C)

उ० =) • चरण पादुका नरसंहार को मध्यप्रदेश का जलियांवाला बाग हत्याकांड कहा जाता है।

• 1930-31 में छतरपुर में व्यापक नरसंहार हुआ था।

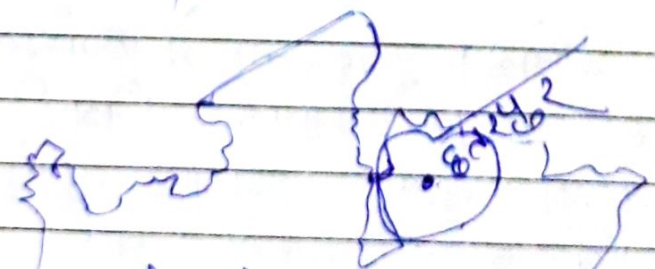

• इसमें अंग्रेजों ने भारतीयों पर अंधाधुंध गोली बरसाई थी हजारों लोग मारे गए तथा घायल हुए थे।

(D)

उ०:) मौर्य साम्राज्य की स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य को जाता है इनकी सहायता महान राजनीतिज्ञ चाणक्य के द्वारा कौटिल्य के द्वारा की गई थी। इनकी उपलब्धियाँ निम्न हैं

→ जैन धर्म का प्रसार।

→ साम्राज्य विस्तार
→ यूनानी राजकन्या से विवाह के कारण मेगस्थनीज इनके दरबार में आया तथा इण्डिका पुस्तक में तात्कालिन भारतीय समृद्धि सम्पन्नता का वर्णन किया

→ दक्ष प्रशासनिक व्यवस्था। आदि।

(E)

उ०:) कुंवर चैन सिंह :—
• म०प्र० के सीहोर में इनकी छत्री स्थित है।
• यह म०प्र० के प्रथम शहीद हैं।
• अंग्रेज जनरल मेडाक और कुंवर चैन सिंह के बीच सीहोर में भीषण युद्ध हुआ।
• चैन सिंह तथा इनके दो अंगरक्षक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
• इनका पालतु कुत्ता (स्वान) 'शेरू' भी इस युद्ध में मारा गया।
• हरबोलों के द्वारा इनकी गौरव गाथा गाई जाती है।

(F)

उ०:) मध्यप्रदेश के प्रमुख ताम्रपाषाणिक स्थल :—
– कायथा, नवदाटोली आदि हैं

- इन स्थलो पर प्राप्त साक्ष्यो मे तांबे तथा पत्थर की वस्तुएे प्राप्त हुई है।

(G)
30 ई) म०प्र० मे जंगल सत्याग्रह :—
=> 1923 ई. मे यह सत्याग्रह हुआ
=> म०प्र० के नागपुर से इसका नेतृत्व पुरनचंद्र राका एवं महात्मा भगवानदीन ने किया था।

(H)
30 ई)

DATE
PAGE

Q.

(I)
30 उ) भारत छोड़ो आन्दोलन में म.प्र.का योगदान :
1942 में सम्पन्न इस आन्दोलन के समय म.प्र. में आज के म.प्र. से बड़ा क्षेत्र सम्मिलित था।
शंकर दयाल शर्मा, रविशंकर शुक्ल आदि महान व्यक्तियों ने इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

(J)
30 उ) हुमायुँ की असफलता के कारण -
⇒ इसने साम्राज्य पहले ही अपने भाईयों में बाँट दिया जिससे जरूरत पड़ने पर उन्होंने साथ नहीं दिया।
⇒ युद्ध की अदूरदर्शी रणनीति।
⇒ हर बार शेरशाह से युद्ध गंगा की तराई वाले क्षेत्र में किया जहाँ वर्षा तथा नदी के बहाव से इसे भारी क्षति होती थी।
⇒ इसके शत्रु जैसे शेरशाह सूरी का अत्यधिक बलवान तथा बुद्धिमान होना।

(K)
30 उ) गौतमी पुत्र शतकर्णी एक प्रमुख तथा प्रसिद्ध सातवाहन शासक था।
. जिसके विजय अभियानों की जानकारी नासिक के अभिलेख से प्राप्त होती है।
. इसका नाम इसकी माता के नाम पर रखा गया था।

(L)

उ० 6) फ्रांस की क्रान्ति मे दार्शनिकों की भूमिका जन जागरूकता से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है

- दांते, मांटेस्क्यू, वाल्टेयर आदि फ्रांस के प्रमुख विचारक है
- फ्रांस की क्रान्ति में स्वतंत्रता से ज्यादा समानता पर बल दिया गया था।
- विचारको तथा दार्शनिकों के द्वारा समाज के सामनो समाज तथा शासन व्यवस्था का स्पष्ट प्रदर्शन किया गया था परन्तु कहीं भी क्रान्ति तथा विद्रोह की बात नहीं कही थी
- नेपोलियन के अनुसार यदि "रूसो" न होता तो क्रान्ति नहीं होती।

Q. 3

(a) :-

उ० a) प्रथम विश्व युद्ध 1914 ई. से प्रारम्भ हुआ जिसमे सम्पूर्ण विश्व को युद्ध का मैदान बना दिया, इसके प्रमुख कारण !—

- साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा
- कूटनीतिक संधियाँ
- मोरक्को संकट
- विकृत राष्ट्रवाद
- समाचार पत्रों की भूमिका
- अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव
- तात्कालिक कारण
- जर्मन सम्राट का व्यक्तित्व

(1) साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा :- देशों की आपसी प्रतिस्पर्धा तथा टकराव बढ़ते जा रहे थे आरंभ में इनका निपटान शांतिपूर्ण तरीके से होता था परन्तु समय के साथ परिस्थितियाँ बदली तथा 1870ई.तक नवीन साम्राज्यवाद का प्रारम्भ हुआ। जो क्रूरतम था।

(2) जर्मन सम्राट विलियम कैसर अत्यधिक हठी तथा महत्वकांक्षी व्यक्ति था। इसने साम्राज्य विस्तार के लिए सभी देशों से शत्रुता मोल ली थी।

(3) तात्कालिक कारण :- 1908-9 ई. में ऑस्ट्रिया तथा हंगरी ने बोस्निया - हर्जेगोविना को अपने साम्राज्य में मिला लिया था।

(4) 1904 में ब्रिटेन तथा फ्रांस ने आपसी समझौता किया था जिसके तहत ब्रिटेन को मिस्र तथा फ्रांस को मोरक्को मिला था परन्तु जर्मनी इससे क्षुब्ध हुआ तथा मोरक्को की स्वतंत्रता के लिए आगे आया।

(5) यूरोप की संयुक्त व्यवस्था 1825 में समाप्त हो गई थी इसके पश्चात कोई संस्था नहीं बन पाई थी।

(6) विकृत राष्ट्रवाद :- फ्रांस की क्रान्ति द्वारा राष्ट्रवाद का जन्म हुआ, जो उग्र रूप धारण कर। विश्व युद्ध का कारण बनी।

(7) समाचार पत्रों ने दुष्प्रचार द्वारा युद्ध का वातावरण उत्पन्न करने का कार्य किया।

(C)

30 c) इंग्लैण्ड में प्रचुर मात्रा में पूंजी तथा मानव संसाधन था यह यूरोप के अन्य देशों में भी उपलब्ध होने के बाद भी क्रान्ति का प्रारम्भ इंग्लैण्ड में होने के निम्न कारण है)

1. अनुकूल राजनीतिक वातावरण
2. भौगोलिक स्थिति
3. सुदृढ नौसेना
4. प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता
5. जनसंख्या वृद्धि
6. औपनिवेशिक विस्तार
7. वैज्ञानिक क्रान्ति नए अविष्कार
   - → वस्त्र उद्योग
   - → लोहा एव कोयला उद्योग
   - → परिवहन क्षेत्र मे अविष्कार
8. कृषि क्रान्ति

(B)

30 c) सिंधु सभ्यता के पतन के कारणों पर वैज्ञानिक तथा (पुरातत्वविद) एक मत नहीं है)
इनके मत भिन्न - भिन्न है
- जैसे - कुछ वैज्ञानिकों का मानना है पतन का कारण बाढ़ है।
- तथा कुछ अकाल मानते है)
- युद्ध (अन्य जनजातियों का आक्रमण)
- भूकम्प
- जलवायु परिवर्तन आदि कारणों

को इस वैभव शाली सभ्यता का पतन का
कारण समझा जाता है।

कारण समझा जाता है)